Sukhdev - 24 Aug

Q- "The tribal and peasant rebellion laid the foundation of the revolt of 1857." Comment [20 M]

Ans- 1757 के पश्चात सौ वर्षों में ब्रिटिश राज्य व उससे संलग्न कठिनाइयों के विरुद्ध हमें अनेक आन्दोलन, विद्रोह व सैनिक विप्लव दिखाई देते हैं, हालांकि इसमें सबसे व्यापक 1857 का विद्रोह था। यद्यपि 1857 के पूर्व के विद्रोहों में तथा 1857 के विद्रोह में सीधा संबंध नहीं दिखाई देता है, किन्तु उक्त सभी विद्रोह सामान्य रूप से उन्हीं ब्रिटिश नीतियों के विरुद्ध हुए जिन पर 1857 का विद्रोह आधारित था। इन ब्रिटिश नीतियों में प्रमुख हैं-

1- राजनैतिक कारकों में कंपनी की भारतीय रियासतों पर प्रभुत्वशाली नियंत्रण व धीरे - धीरे समाप्ति की नीति जिसके तहत सहायक संधि प्रणाली व हड़प नीति प्रमुख हैं, ~~इससे~~

2- प्रशासनिक व आर्थिक कारकों में पारंपरिक भारतीय अभिजात वर्ग को शक्ति व पदों से वंचित करना, पद - प्राप्ति के अवसरों की कमी, ~~अत्यधिक~~ अत्यधिक भूमि - कर मांग से किसानों में असंतोष, परंपरागत तालुकदार व

वंशानुगत भूमिपतियों को अपने - अपने पदों व अधिकारों से वंचित करना, भारतीय हस्तशिल्प, व्यापार का सर्वनाश, भूमि को बेचने योग्य वस्तु बनाने से पारंपरिक ग्रामीण अर्थव्यवस्था का विनाश, कृषि के वाणिज्यीकरण से असंतोष आदि

3 - सामाजिक व धार्मिक कारणों में अंग्रेजों की जाति - श्रेष्ठता की भावना, भारतीयों को ईसाई बनाने के प्रयास आदि।

4 - जनजातीय विद्रोहों के कारणों में आदिवासियों को परम्परागत अधिकारों व स्वतंत्रता पर ब्रिटिश भूमिकर व्यवस्था, गैर - आदिवासियों जैसे - जमींदार, सूदखोरों के आगमन तथा नये जंगल कानून आदि प्रमुख हैं,

1857 के विद्रोह के पूर्व के जनजातीय व किसान विद्रोहों में भी हमें धर्म की महत्वपूर्ण भूमिका, राजनैतिक चेतना की उपस्थिति, शत्रु, मित्र की पहचान, संगठन, कार्यक्रम, नेतृत्व, लक्ष्य, लामबन्दी, पूर्व चेतावनी का गुण आदि दिखायी देता है जिसकी व्यापक अभिव्यक्ति 1857 के विद्रोह में हुई। हालांकि 1857 के

Scanned by CamScanner

विद्रोह को बढ़ाने मे जिस कारक की तात्कालिक भूमिका थी वह सैन्य कारक था।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि यद्यपि 1857 के विद्रोह व किसान व जनजातीय विद्रोह अपने स्वरूप में पूर्णतः भिन्न व संबंध में दूरस्थ थे तथापि ब्रिटिश नीतियों के विरुद्ध विद्रोह की भावना व नेतृत्व वह गुण था जिसने 1857 के विद्रोह को महत्वपूर्ण आधार प्रदान किया।

Scanned by CamScanner

Q- "The peasant movements of the second half of the nineteenth century lacked a positive conception which would unite the people in a common struggle on a wide regional and all India plane and help develop long-term political developments." Critically evaluate (10 M)

उत्तर- 1857 के बाद के भारत में, देश के सभी भागों में किसान व आदिवासी विद्रोह हुए हालांकि वे असंबद्ध, अलग-थलग व स्थानबद्ध आन्दोलन ही बने रहे, इसके पीछे निम्न कारण थे -

1- बड़ी सीमा तक भारत के खेतिहर समाज का जटिल वर्गीय ढांचा, जिसमें भारी क्षेत्रीय अन्तर पाये जाते थे,

2- भारतीय किसान, वर्ग जैसी आर्थिक श्रेणी की अपेक्षा जाति व धर्म जैसे सांस्कृतिक समूहों से अपने आपको अधिक जोड़ते थे, किसानों के मानस जगत का केन्द्रीय तत्व वर्ग नहीं 'समुदाय' था, इसी कारण जब ब्रिटिश आर्थिक व्यवस्था, भूमिकर प्रणाली, राजस्व की अधिक मांगों, जमींदारों के तथा सूदखोरों के अत्याचार आदि के विरुद्ध किसान आन्दोलन हुए,

Scanned by CamScanner

तो वे स्थानीय स्तर तक ही सीमित रहे यद्यपि इनमें से अनेक को ब्रिटिश औपनिवेशिक चरित्र, नवीन आर्थिक संबंधों, शोषण व प्रभुत्व के उपकरणों की जानकारी थी

3- किसानों की चेतना में अभी भी दूर बैठा राजा (ब्रिटिश सम्राट) उनका रक्षक था जबकि पास में मौजूद भ्रष्टाचारी अधिकारी उनका शत्रु था

उक्त सभी कमियों को हम 1920 के बाद के गांधीवादी आन्दोलन के काल में अपेक्षाकृत दूर होते पाते हैं जब इनका जुड़ाव व्यापक राष्ट्रीय राजनीति से हुआ। यद्यपि 'कुलीन नेतृत्व' व 'किसान चेतना' को लेकर मतभेद है, तथापि मध्यवर्गीय शहरी नेताओं द्वारा अलग-थलग किसान आन्दोलनों को औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध व्यापकतर संघर्ष में गूंथने में पर्याप्त सफलता मिली जिससे राष्ट्रीय आन्दोलन का दायरा भी व्यापक हुआ।

Scanned by CamScanner